© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

मोदी की विदेश नीति के पाँच साल : राष्ट्रीय हितो के संदर्भ में

अजीत कुमार
शोध छात्र, (राजनीति विज्ञान)
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
इलाहाबाद।

शोध आलेख सार– दक्षिण एशिया में शांति एवं स्थिरता, पर्यावरण की चुनौती, आतंकवाद, चीन का बढ़ता प्रभाव, विश्व–व्यापार में बढ़ता संरक्षणवाद आदि कुछ मुद्दें हैं जिस पर अभी संतोषजनक कार्य करने की आवश्यकता है।

मुख्य शब्द– मोदी, विदेश, नीति, पाँच साल, राष्ट्रीय, हित

26 मई 2014 में गठित एन0डी0ए0 सरकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 15 अगस्त 2014 को नई दिल्ली के लाल किले की प्राचीर से विदेश नीति के संदर्भ में एक ऐसे नवीन सिद्धान्तों की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसका प्रमुख उद्देश्य बदलती विश्व व्यवस्था में राष्ट्रीय हितो को साधने के साथ–साथ अपने पड़ोसियों से सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना रही है। जिसे पड़ोसी प्रथम नीति की संज्ञा दी गयी। विस्तारित पड़ोसी की नीति पर आगे बढ़ते हुए दक्षिण–पूर्व एशियाई राष्ट्रों से मन्द पड़े सम्बन्धों में नई ऊर्जा फूकने हेतु एक्ट ईस्ट पॉलिसी को अपनाया गया जिसमें अधिक व्यवहारिक तथा पहलकारी तत्वों का समावेश किया गया। पश्चिम एशिया में अफगानिस्तान, ईरान, खाड़ी देशों (सउदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ओमान) तथा इजराइल आदि से भी सम्बन्धों को संतुलित करने का प्रयास किया गया। जिसका प्रमुख उद्देश्य भारत के क्षेत्रीय महाशक्ति के प्रभाव को विस्तार देना तथा वैश्विक शक्ति की ओर कदम बढ़ाना। भारत की विदेश नीति की क्रियाशीलता का महत्व तब और बढ़ जाता है, जब दक्षिण–एशिया तथा हिन्द–प्रशांत क्षेत्र में चीन का हस्तक्षेप तीव्रता से बढ़ रहा है। अभी हाल ही में नरेन्द्र मोदी की सरकार का प्रथम कार्यकाल पूर्ण हो चुका है।

अतः सफलतापूर्वक पाँच वर्ष का कार्यकाल पूर्ण करने के पश्चात समय आ गया है कि मोदी की समस्त नीतियों का ईमानदारी पूर्वक विश्लेषण किया जाये। लम्बे समय के पश्चात भारतीय राज्य व्यवस्था में एक पूर्ण बहुमत की स्थायी सरकार का गठन हुआ था अतः जनमत इस बात से आशावान थी की राष्ट्रीय हितो से समझौता किये बगैर कुछ ऐसे निर्णय लिये जायेगें जिससे राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारत शक्ति एवं साख में वृद्धि हो इसी क्रम में राष्ट्रीय स्तर पर सर्जिकल स्ट्राइक, नोट बंदी, जी0एस0टी0, नीति आयोग आदि इसके उदाहरण रहे।

तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने प्रेस कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुए कहा था कि हमारी सरकार ने अपनी विदेश–नीतियों द्वारा 192 देशों में से 186 राष्ट्रों से सम्पर्क साधने में सफल रही। सर्वाधिक सफलता एक्ट ईस्ट पॉलिसी में मिली है। इसके अतिरिक्त जापान, ईरान, बंग्लादेश से सम्बन्ध पूर्व से बेहतर हुए। मोदी की विदेश नीति की सबसे बड़ी सफलता फिलिस्तीन के साथ–साथ इजराइल से भी अच्छे सम्बन्धों की स्थापना रही है। इसके बावजूद अमेरिका तथा रूस में भी संतुलन साधनें का प्रयास किया गया। लेकिन इन सफलताओं के बावजूद पड़ोसी राष्ट्रो से कई प्रमुख चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है जैसे– पाक द्वारा सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देना।

उपर्युक्त तथ्यों के संदर्भ में गत वर्षों की विभिन्न घटनाओं का विश्लेषण कर मोदी विदेश नीति की समीक्षा की जा सकती है।

प्रधानमंत्री मोदी द्वारा अपने शपथ ग्रहण समारोह में सार्क राष्ट्रों के प्रमुखों को आमंत्रित करना इस बात का स्पष्ट संकेत था कि भारत अपने पड़ोसियों से मजबूत कूटनीतिक सम्बन्धो हेतु कृत संकल्प है। मोदी की विदेश नीति के साथ–साथ उनकी व्यक्तिगत आकर्षक क्षमता, कुशल संवाद शैली भी पड़ोसियों से बेहतर सम्बन्धों हेतु लाभकारी रहे। स्वार्थ रहित एवं पहलकारी नीति के द्वारा वैचारिक रूप से भिन्न पड़ोसी राष्ट्रों से प्रगाढ़ सम्बन्धों हेतु प्रयत्न किये गये यद्यपि अपेक्षित सफलता नही मिली जैसे नेपाल आज भी माओवादी प्रभाव द्वारा चीन की तरफ अधिक झुका दिखाई देता है। लेकिन पड़ोसी प्रथम नीति की सबसे बड़ी सफलता तब प्राप्त हुई जब मोदी द्वारा अपनी प्रथम विदेश यात्रा के लिए छोटे पड़ोसी देश भूटान को चुना गया था चीन के साथ डोकलाम विवाद में भारत के साथ भूटान मजबूती के साथ खड़ा दिखाई पड़ा। बांग्लादेश के साथ सम्बन्धों को सुधारने में मोदी विदेश नीति पर्याप्त सफल रही। इसी दौरान लम्बे समय से लम्बित भू–विवाद को भी सुलझा लिया गया। तीस्ता नदी जल समझौता में भी प्रगति दिखाई दी। इसके अतिरिक्त भारत–बांग्लादेश में व्यापारिक सम्बन्धों में प्रगाढ़ता देखने को मिलती है जैसे भारतीय जीवन बीमा निगम बांग्लादेश में भी अपने जीवन बीमा व्यापार को कर सकती है।

चितगांव तथा मोगला पोर्ट को व्यापारिक हितो के प्रयोग हेतु दोनो देशों में एम0ओ0यू0 तैयार किया गया। ढाका–शिलांग और गुवाहाटी के लिए बस सेवा तथा कोलकाता–ढाका–अगरतला के मध्य भी बस सेवा हेतु समझौता सम्पन्न हुआ। इस पारस्परिक प्रगाढ़ सम्बन्धों का लाभ बांग्लादेश के साथ–साथ भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों को भी होगा। उत्तर–पूर्वी राज्यों में कनेक्टीविटी तथा आर्थिक विकास को गति मिलेगी। इन राज्यों से हो रहे अवैध मानव–तस्करी, मादक पदार्थो की तस्करी, जाली मुद्रा के प्रवाह (बांग्लादेश द्वारा) पर भी प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। इससे उत्तर–पूर्वी राज्यों में बढ़ती विभाजनकारी प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर राष्ट्रीय एकीकरण को मजबूत किया जा सकेगा।

भारत–भूटान सम्बन्धों में नई ऊर्जा हेतु मोदी द्वारा अपनी प्रथम विदेश यात्रा के रूप में भूटान को चुना तथा एक नारा– ''भारत–भूटान के लिए, भूटान–भारत के लिए'' दिया। 2007 की भारत–भूटान संधि में भूटान ने अपनी प्रतिबद्धता जाहिर की। इसी के तहत सन्–2017 का चीन के साथ डोकलाम विवाद में

भूटान चीन के सामने न झुकते हुए भारत का पूर्णतया साथ दिया, जो विदेश नीति की अभूतपूर्व सफलता रही।

नेपाल तथा पाकिस्तान के सम्बन्ध में भारतीय विदेश नीति असफल रही क्योंकि दोनो देशों में परम्परागत रवैये में कोई गुणात्मक सुधार नहीं आया। शपथ ग्रहण में सार्क के प्रमुखों को आमंत्रित करना तथा पुनः बाद में अपना पूरा ध्यान विम्सटेक के देशों पर केन्द्रित किया गया जिसके पीछे पाक के भारत विरोधी गतिविधियों, उरी तथा पठानकोट आतंकी हमला, कश्मीर का राग एवं भारत द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक के बाद भी पाकिस्तान की गतिविधियों में कोई बदलाव न दिखाई देना रहा। यहाँ तक कि सत्ता परिवर्तन के पश्चात इमरान खान के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी निराशा ही हाथ लगी। जो मोदी की विदेश नीति की प्रमुख चुनौती रही है।

चीन के साथ मोदी की विदेश नीति संघर्ष के साथ सहयोग की नीति पर प्रगतिशील है। क्योंकि चीन की नीतियों में आक्रामकता, अविश्वसनीयता तथा अस्थिरता के तत्व विद्यमान है तथा उभरती महाशक्ति के रूप में अपने प्रभाव को विस्तार दे रहा है। भारत–चीन के मध्य डोकलाम विवाद का 73 दिनों के लम्बे संघर्ष के बाद शांतिपूर्ण तरीके से दोनो देशो की सेनाओं का पीछे हटना भारतीय विदेश नीति की चीन के संदर्भ में बड़ी सफलता थी। चीन के साथ भारत का कई मुद्दों को लेकर स्पष्ट मतभेद है, जिनमें चीन की महत्वकांक्षी परियोजना वन–बेल्ट–वन रोड है जिसका हिस्सा बनने से भारत ने इन्कार कर दिया जिसके प्रमुख कारण इसके एक भाग 'चाइना–पाक इकॉनमिक कॉरिडोर' का भारतीय क्षेत्र (POK) से गुजरना है, जिसका भारत अपनी संप्रभुता का उलंघन मानता है। इसके साथ भारत–चीन के मध्य अन्य मतभेदों में पाक आतंकी मसूद अजहर को वैश्विक आतंकवादी घोषित कराने में अड़ंगा लगाना एवं न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप (NSG) में चीन द्वारा भारत की सदस्यता का विरोध करना हो। इन सभी चीनी गतिविधियों के मूल में चीन की अपनी एशियाई वर्चस्व को बनाए रखना है।

यद्यपि इन संघर्षों के बावजूद भारत एवं चीन मजबूत आर्थिक एवं व्यापारिक रिश्तों को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे प्रधानमंत्री मोदी एवं शी जिनपिंग के मध्य वुहान वार्ता की अनौपचारिक बैठक में विवादों को आर्थिक सम्बन्धों में आड़े न आने देने की भावना व्यक्त की गयी थी। जो एक ऐसे समय में शुभ संकेत है जब विकसित राष्ट्रों में (अमेरिका) संरक्षणवादी नीतियों की स्वीकार्यता बढ़ रही है।

रूस–भारत का एक परखा हुआ मित्र साबित रहा है जो शीत युद्ध के अंत तक हर मोर्चे पर भारत का साथ देता रहा। लेकिन शीत युद्ध की समाप्ति, भारत की तीव्र आर्थिक एवं तकनीकि विकास की आवश्यकता आदि कारकों ने भारत एवं अमेरिका को नजदीक लाने में सहायक सिद्ध हुए। इस दौरान भारत एवं रूस के मध्य सम्बन्ध लगभग मन्द पड़ गये थे।

चीन–रूस–पाक का बनता त्रिकोण, रूस–पाक के मध्य बढ़ते सम्बन्ध जैसे सयुक्त सैन्य अभ्यास, करॉची–लाहौर गैस पाइप लाइन का कार्य आदि भारतीय विदेश नीति के लिए चिंता का विषय था। इसी संदर्भ में मोदी द्वारा सॉंची में अनौपचारिक वार्ता से रिश्तों में नई ऊर्जा फूँकने का प्रयास किया गया जिसमें

रेल, ऊर्जा, अंतरिक्ष तथा रक्षा के क्षेत्र में विभिन्न समझौते हुए। इनमें रक्षा क्षेत्र में S-400 का 40 हजार करोड़ का समझौता महत्वपूर्ण रहा क्योंकि अमेरिका के विरोध के बावजूद भारत ने अपने राष्ट्रीय हितो को सर्वोच्च स्थान दिया जो भारत के बढ़ते प्रभाव एवं रणनीतिक स्वायत्तता का परिचायक रहा। पारम्परिक मित्र रूस के साथ मोदी द्वारा रणनीतिक परिपक्वता का परिचय दिया गया क्योंकि वैश्विक राजनीति में चीन एवं अमेरिका से सम्बन्धों की संतुलित करना रूस के सहयोग के बिना सम्भव नहीं होगा। रूस द्वारा भी पहल करते हुए शंघाई सहयोग संगठन में भारत की सदस्यता में सहयोग करना एवं रूस के पूर्वी भाग के विकास हेतु भारतीय निवेश को आमंत्रित करना एक सकरात्मक पहल है। अतः स्पष्ट है कि भारत किसी राष्ट्र से अपने सम्बन्ध पारम्परिक मित्र के मूल्य पर नहीं बढ़ा सकता है।

भारत और अमेरिका का सम्बन्ध उतार–चढाव से भरा रहा है। लेकिन राष्ट्रपति बुश एवं प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मध्य हुए असैन्य नागरिक परमाणु समझौता–2006 से दोनो देशों में रणनीतिक सहयोग की ओर आधारभूत कदम था। सन् 2014 में सत्ता परिवर्तन के बाद जिस मोदी को अमेरिका अपने देश का वीजा देने से मना कर दिया था वही प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत करने के लिए आतुर दिखा तथा प्रधानमंत्री मोदी द्वारा चार यात्रा कर अमेरिका के साथ मजबूत सम्बन्धों का आधार विकसित किया। जिसका परिणाम ओबामा काल में दोनो देशो के मध्य मजबूत रणनीतिक सम्बन्ध विकसित हुए तथा अमेरिका द्वारा भारत को दक्षिण एशिया में महत्वपूर्ण रणनीतिक सहयोगी स्वीकार किया गया। राष्ट्रपति ओबामा द्वारा अपने कार्यकाल में दो बार भारत की यात्रा की गयी तथा मोदी को विश्व का एक अच्छा नेता एवं एक्सन मैन की संज्ञा दी।

वर्तमान समय में बढ़तें भारत–अमेरिका सम्बन्ध में दोनो के निहितार्थ है, भारत को तीव्र आर्थिक विकास हेतु उच्च तकनीकि, ऊर्जा सहयोग, आतंकवाद पर सहयोग की आवश्कता है तो वही अमेरिका को बड़ा बाजार, लोकतंत्र एवं मानवाधिकार के मुद्दे पर समान दृष्टिकोण, आर्थिक एवं सैनिक शक्ति के रूप में चीन का बढ़ता प्रभाव, दक्षिणी चीन सागर एवं हिंद–प्रशांत क्षेत्र में मुक्त एवं सामान्य व्यापार हेतु अमेरिका को भारत की अपरिहार्य आवश्यकता है।

इन्ही चुनौतियों के परिपेक्ष्य में अमेरिका द्वारा परमाणु नियंत्रक संगठनों आस्ट्रेलियन ग्रुप, वासेनार ग्रुप एवं एम0टी0सी0आर0 जैसे संगठन में भारत की सदस्यता दिलाने में सहयोग प्रदान किया गया। लेकिन अमेरिका के तमाम प्रयासों के बाद भी चीन के विरोध के कारण न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप में भारत सदस्य नही बन सका। जून–2017 में राष्ट्रपति ट्रंप एवं मोदी जी से मुलाकात में विश्व व्यापार आतंकवाद एवं वैश्विक शासन के मध्य वार्ता हुई। वर्तमान में दोनो के मध्य रणनीतिक सहयोग के संदर्भ में क्वाड, जय तथा मालाबार संयुक्त सैन्य अभ्यास के द्वारा सहयोग किया जा रहा है तथा लैमुआ पर भी हस्ताक्षर किये गये है। भारत–अमेरिका के मध्य इतने घनिष्ट सम्बन्ध पूर्व में कभी नहीं रहे, लेकिन पर्यावरण, विश्व–व्यापार, संरक्षणवाद जैसे मुद्दों पर मतभेद भी विद्यमान हैं।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि भारत पारस्परिक लाभ एवं सहयोग तथा राष्ट्रीय हितो जैसे मूलभूत तत्वों के आधार पर विश्व की विभिन्न महाशक्तियों से सम्बन्धों की स्थापना में रणनीतिक स्वायत्तता का परिचय दिया। प्रधानमंत्री मोदी की सशक्त विदेश नीति का सफल उदाहरण चीन के साथ डोकलाम विवाद में दिखाई दिया जिसमें भारत को रणनीतिक विजय हासिल हुई। गत वर्षों में भारतीय विदेश नीति न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक मुद्दों जैसे–दक्षिण चीन सागर, सम्पूर्ण हिंद–प्रशांत क्षेत्र में अपनी गहरी रूचि का परिचय दिया।

भारत ने जहां वैश्विक कूटनीतिक मुहिम चलाकर पाकिस्तान को विश्व समुदाय से अलग–थलग कर दिया वहीं भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका एवं नेपाल आदि राष्ट्रों से अपने सम्बन्धों में नई मजबूती प्रदान की। इसलिए भारत अब सार्क की अपेक्षा विम्सटेक(पाक को छोड़कर) पर अधिक ध्यान दिया है। विश्व स्तर पर भारत ने जहाँ अमेरिकी सहयोग से वासेनार, आस्ट्रेलियन ग्रुप एवं एम0टी0सी0आर0 ग्रुप में प्रवेश पा लिया वहीं राष्ट्रीय हितो को सर्वोच्च स्थान देते रूस के साथ S-400 का समझौता कर स्वाधीन विदेश नीति का परिचय दिया। भारत ने जहाँ आस्ट्रेलिया, जापान एवं इजराइल से अच्छे सम्बन्ध बनाए वहीं अपनी फिलीस्तीन नीति में कोई परिवर्तन नहीं किया।

यद्यपि दक्षिण एशिया में शांति एवं स्थिरता, पर्यावरण की चुनौती, आतंकवाद, चीन का बढ़ता प्रभाव, विश्व–व्यापार में बढ़ता संरक्षणवाद आदि कुछ मुद्दें हैं जिस पर अभी संतोषजनक कार्य करने की आवश्यकता है।

संदर्भ–

[1]. Meghnad Desai, "Political Shock :Trump, Modi Brexit and the Prospect for Liberal Democracy Rupa Publication India Pvt. Ltd. New Delhi 2017.

[2]. The Russian ride on Modi's meeting with Putin", The Hindu May 25, 2018

[3]. "Extremely Productive Talks with Putin: Modi", The Hindu May 22, 2018. www.thehindu.com

[4]. Paul R.Virothi, Mark V. Kauppi, "International Relations and world politics: Secutiry, Economy, Indentify". Dorling Kinderley India Pvt. Ltd., New Delhi 2007

[5]. Dr. B.L. Fadia Sahitya Bhwan Publication, Agra U.P.

[6]. Puspesh Pant- 21vi Shatabdi me Antarrashtriya Sambandh 5th Edition Mc. Graw Hill Education.

[7]. V.N.Khanna- International Relation, 5th Edition, Vikas Publication House. Noida U.P. 201301

[8]. Ministry Of External Affairs- (MEA) 2018.

[9]. World Focus Magazine : January 2019.

[10]. Danik Jagran Sampadkiya Lekh -2018.